613 (P)
H (26)
MICROFILM

1194/1092

T
19p2

Jhansi Ki Rani-Ranchandi
Lakshmi Bai.
3 copies
Govt. of U.P.
R.No. 255
D/14. 2. 40.
IMPERIAL RECORD Department

शहीद स्मृति पुस्तक माला का प्रथम पुष्प

झाँसी की रानी

रणचण्डी लक्ष्मी बाई

in Hindi
613
173

"मर कर भी वो अमर हैं जो मरते स्वदेश पर"

लेखक—

सुदर्शन "चक्र" मिश्र ।

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 613
Date 15.12.71
GOVT. OF INDIA

891.431
M687J

झांसी की रानी

रणचण्डी लक्ष्मी बाई

[१]

आओ सब मिलि प्रथम हिन्द मां के चरणों में ध्यान धरें ।
फिर स्वतन्त्रता की दीवानी रानी का गुणगान करें ॥
युग था वह सन् सत्तावन का राज फिरंगी जारी था ।
जुल्म नित नये होते थे यह सारा देश दुखारी था ॥

[२]

सात समुद्र पार करके यक दल भारत में आया था ।
दगा द्वेश दुर्भिक्ष दमन दासता साथ में लाया था ॥
दीन मलीन देख कर ही इनका स्वागत सत्कार किया ।
दूध पिला कर हमने ही अस्तीन में साँप तयार किया ॥

[३]

कुछ दिन तो सौदा वेचा अरु घूम घूम व्यापार किया ।
मोती बेंचे मूंगे बेंचे थे चाय का भी रोजगार किया ॥
फिर छल प्रपंच और दुष्ट नीति का देश में खूब प्रचार किया ।
भाई से भाई लड़वा कर भारत पर अधिकार किया ॥

[४]

जंजीरें देकर पैरों में गले गुलामी हार दिया।
एहसानों के बदले में कितना सुन्दर उपहार दिया ॥
जो भारत सदियों से ही था दुनिया का सरताज रहा।
निज पाँडित्य कला कौशल पर जिसको अति फल नाज रहा ॥

[५]

विष का कड़वा घूंट गले में क्या चुपचाप उतर जाता।
होता गुलाम पीछे भारत पहले तो शूर दल मर जाता ॥
उठे चले कुछ दीवाने सर बाँध कफन मैदानों में।
होड़ लगी मां पर मरने की बालक बृद्ध जवानों में ॥

[६]

सर्व प्रथम मंगल पाँड़े विद्रोही बन सन्मुख आये।
मां स्वतंत्रता के चरणों में शीश चढ़ाने को धाये ॥
अहमदशाह अजीमुल्ला ने अपने शीश कटाये थे।
कुंवरसिंह से बृद्ध बीर भी बलि बेदी पर आये थे ॥

[७]

कानपूर के नानाराव ने क्रांति का साज सजाया था।
अजनाले की खोहों का बदला अच्छी तरह चुकाया था ॥
राज कुमारी मैना ने जिन्दा जलना स्वीकार किया।
पर न पिता का पता बताया निज जीवन बलिहार किया ॥

(८)

सेना पती ताँतिया ने भी रण में हांथ दिखाए थे।
ले कर में तरवाल करवाल कण्ठ रिपुओं के काट गिराए थे॥
साहस और बीरता का क्या अनुपम मेल दिखाया था।
कुछ स्वदेश दीवानों ने महिनो ही खेल खिलाया था॥

(९)

अगर हमारे भाई ही उस समय न इन्हें दगा देते।
तो यह निश्चय विदेशियों को ठोकर मांर भगा देते॥
अब आगे उस बीर मूर्ति रानो के कहें कहानी है।
हर स्वदेश प्रेमी के दिल में जिसकी अमिट निशानी॥

(१०)

लाम्बे पोरो पन्थ की कन्या का था नाम मनू बाई।
कहते बाजीराव छबीली हुई बही लक्ष्मी बाई॥
झाँसी के राजा गङ्गाधर के सँग हुई सगाई थी।
बड़े भाग्य से यह अमूल्य सम्पति राजा ने पाई थी॥

(११)

दोनों ही थे नीतिवान और धर्म प्रजा पालक प्यारे।
रहते सज्जन जन प्रसन्न थे दुखित दुष्ट मन में सारे॥
झाँसी में दाम्पत्य प्रेम से मानो स्वर्ग उतर आया।
पर विधि बिधान कुछ औरही था उसको यह दृश्य नहींभाया॥

(१३)

झाँसी के रक्षक लक्ष्मी पति ने असमय ही जग छोड़ दिया।
जो था नाता इस दुनिया से उसको पल भर में तोड़ दिया॥
रानी रोती थी महलों में बिलख रही जनता सारी।
तब करी लार्ड डलहौजी ने झांसी लेने की तैयारी॥

(१४)

भीख माँगते हुए यहां पर एक रोज जो आया था।
आज उसी ने झांसी पर अपना झण्डा फहराया था॥
पर रानी ने कहा साफ यह बात नहीं स्वीकार हमें।
पराधीन होकर जीने की जरा नहीं दरकार हमें॥

(१५)

बातों बातों बात बढ़ी बातों में हा तकरार भई।
सजी फौज अंगरेजों की तब रानी भी तैयार भई।
लेफ्टिनेन्ट वौकर के साथ में गोरों की सेना धाई।
घेर लिया गढ़ चहूं ओर से मार काट करने आई।

(१६)

रण करने को रानीयों बन कर रणचण्डी निकल पड़ी।
ज्यों दैत्यों का वध करने को दुर्गा देवी स्वयं बढ़ी॥
कुछ सैनिक दल साथ लिया फिर द्वार किले का खोल दिया।
पिली सिंहनी स्यारों में एक दम से धावा बोल दिया॥

[१६]

फटै फिरंगी दल काई सा दबै जिधर लक्ष्मी बाई।
बौखल होकर बौकर भागा बुरी तरह से खिसियाई॥
उसी रोज रानी पहुंची कालपी अश्व ने दम तोड़ा।
चल आया सौ मील इसी से चिर संगिन का संग छोड़ा॥

[१७]

रानी पहुंची जहाँ राव साहब का था विराट दरबार।
फौरन ही राजा के सन्मुख धरी खोल अपनी तलवार॥
कहा सम्हालो यह संपत्ति जो पुरखों से थी मिली हमें।
अब तक रक्षा की थी इसकी क्योंकि प्रेम था दिली हमें॥

[१८]

कहा राव ने नहीं बहिन यह कभी नहीं हो सकता है।
तुमसे ज्यादा और कौन इसको रक्षा कर सकता है॥
सुने राव के वैन तुरत रानी ने सेना सजवाई।
देश प्रेम में हो दीवानी दौड़ ग्वालियर पर धाई॥

[१९]

देश द्रोह का मजा चखा सिंधिया का बंटाधार किया।
लूटे महल खजाने फिर तो गढ़ पर भी अधिकार किया॥
अब की जनरलस्मिथ ने अपनी किस्मत अजमाई थी।
पर रानी ने बुरी तरह इसकी भी गती बनाई थी॥

(२०)

रानी की सखियों ने भी इस युद्ध में बड़े कमाल किए।
स्वतंत्रता देवी के हेतु गोरों के झुन्ड हलाल किए॥
पर पीछे से नर कलंक ह्युरोज फौज लेकर आया।
समय जान रानी ने भी फिर अन्तिम जौहर दिखलाया।

(२१)

जो रहा सामने रानी के गाजर मूली सा काट दिया।
शत्रु सैन की लाशों से रण भूमी को पाट दिया॥
रानी की तलवार स्वाद से रक्त शत्रु का चाट रही।
शीश किसी का किसी का धड़ थी पैर किसी का काट रही।

(२२)

बड़े २ ज्वानों की जानें राह मौत की नाप रहीं॥
रण उन्मत्त देख रानी को दशों दिशायें कांप रहीं।
जो सन्मुख पड़ गया पकड़ पल भर में उसे मरोड़ दिया।
मार काट कर निकल गई रिपुओं का घेरा तोड़ दिया॥

(२३)

रानी आगे बढ़ी मगर सामने भयानक नाला है।
अड़ा अश्व लौटी रानी देखें क्या होने वाला है॥
उसी समय एक गोरे ने पीछे से उस पर वार किया।
रानी ने मरते मरते उस कायर को भी मार दिया॥

(२४]

मरी समर में अमर हुई मां पर सर्वस्व लुटाया था ।
कीमत को आज़ादी की उसने इस तरह चुकाया था ॥
नारी होकर नरसिंहों में अपना नाम लिखाया था ।
अबलाओं में कितना बल है दुनिया को दिखलाया था ॥

(२५)

रानी झाँसी के समान ही हर हिन्दी यदि हो जाए ।
मिटे हुकूमत अँगरेजी भारत में सुख स्वराज्य आए ॥
भारत की मँझधार नाव है उठ कर बीरो पार करो ।
स्मृति में शहीद रानी की स्वदेश का उद्धार करो ॥

शहीद स्मृति पुस्तक माला का द्वितीय पुष्प—
शीघ्रही प्रकाशित होगा
"चक्र" लिखित
क्राँतिकारी लेनिन।
मूल्य केवल दो पैसा
प्रकाशक—
शहीद स्मृति पुस्तक माला,
ग्वाल टोली-कानपुर।

जय प्रेस कानपुर में मुद्रित।